शिष्यता के अनिवार्य तत्व

मसीही जीवन के लिए अनिवार्य तत्व
अध्ययन कुँजी

मसीही जीवन एवं सांसारिक दृष्टिकोण

अध्याय 4 : पवित्र आत्मा के कार्य

परिचय

मसीही जीवन एवं सांसारिक दृष्टिकोण नामक यह अध्याय शिष्यता के अनिवार्य तत्व मॉड्यूल का एक भाग हैं। अध्यायों की यह श्रृंखला मसीही जीवन के लिए आवश्यक चुनावों और अभ्यासों का मूल्याँकन करती है। परमेश्वर के वचन के अनुसार जीवन व्यतीत करने का मतलब है कि हम समझते हैं कि जो भी चुनाव हम करते हैं उससे हमारा विश्वास प्रभावित होता है। इसका अर्थ ज़्यादा प्रार्थना करना, परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन करना और दूसरों की सेवा करना सीखना भी है। मसीहियत की व्यवहारिकता और अपने समुदाय के अन्दर किस तरह से हम अपने विश्वास को पकड़े रहें, यह समझने के लिए ये अध्याय महत्वपूर्ण हैं।

अध्ययन कुँजी को प्रत्येक व्यक्ति के लिए इस मकसद से तैयार किया गया है ताकि वे स्वयं विशेष शिक्षा का गहनता से अध्ययन कर सकें। www.dehindi.org पर प्राप्त वीडियो और ऑडियो को शिष्यता के अनिवार्य तत्व नामक शिक्षा सामग्री के साथ इस्तेमाल किया जा सकता है।

बाइबल के हवालों को पवित्र बाइबल, बाइबल सोसाइटी ऑफ इण्डिया (बी.एस.आई.) से लिया गया है। इन हवालों को प्रकाशित करने की अनुमति ली गयी है। इसके सारे अधिकार आरक्षित हैं।

अन्य सभी सामग्री © 2019 ट्रांस वर्ल्ड रेडियो कनाडा है, और इसका उपयोग किसी भी तरह से किया जा सकता है, जब तक आप इसका उपयोग मसीह के लिए दुनिया तक पहुंचने के उद्देश्य से करते हैं और सामग्री के उपयोग के लिए शुल्क नहीं लेते हैं। अधिक लाइसेंस विवरण देखें: www.discipleshipessentials.org/licensing

मसीही जीवन एवं सांसारिक दृष्टिकोण

अध्याय 4 : पवित्र आत्मा के कार्य

यह किस विषय में है?

इस अध्याय का उद्देश्य हमारे पापी स्वभाव के विरूद्ध लड़ते समय परमेश्वर की सामर्थ्य पर निर्भर होने की आवश्यकता को समझाना है। पवित्र आत्मा त्रिएकता का एक भाग – या परमेश्वर का एक भाग है। यह अध्याय बताता है कि पवित्र आत्मा एक व्यक्ति के जीवन में क्या कार्य कर सकता है और किस तरह से पवित्र आत्मा से परिपूर्ण हुआ जा सकता है।

ताकि आप जान पाएं.....

पवित्र आत्मा हमारे जीवनों में परमेश्वर की आलौकिक उपस्थिति है, और यह वो शक्ति है जिसके द्वारा हम परमेश्वर की इच्छा पूरी कर सकते हैं। प्रभु यीशु ने संसार से जाने से पहले हमारे लिए एक सहायक भेजने का वायदा किया, ताकि उनके चेले अकेले और बिना शक्ति के न रहें। यह सहायक, पवित्र आत्मा, पिन्तेकुस्त के दिन आया। शुरूआती कलीसियाओं ने पवित्र आत्मा के द्वारा अविश्वसनीय प्रगति और चमत्कारों का अनुभव किया। यह आत्मा आज भी सारे विश्वासियों के लिए उपलब्ध है – हमारे जीवनों में परमेश्वर की बनी रहने वाली उपस्थिति है। यह जानना महत्वपूर्ण है कि जबकि परमेश्वर हम से पवित्रता की इच्छा रखते हैं, वे हमें ऐसे ही अपनी ओर से उत्तम प्रयास करके देखने के लिए अकेला नहीं छोड़ते कि हम अपने प्रयासों से कितना पवित्र बन सकते हैं। परमेश्वर हमारी सहायता के लिए अपनी उपस्थिति और शक्ति प्रदान करते हैं!

प्रारंभ

1. क्या कभी भी आपने खुद में कुछ बदलने की कोशिश करी है? हमारे व्यक्तित्व या स्वभाव को बदलना कितना कठिन है?

2. पवित्र आत्मा एक विश्वासी के जीवन में क्या भूमिका निभाता है? क्या आप पवित्र आत्मा के कुछ कार्यों को बता सकते हैं जो कि त्रिएकता के दूसरे लोगों से अलग हैं?

अध्ययन

❖ **पवित्र आत्मा कौन है? :** जब प्रभु यीशु मसीह वापस स्वर्ग चले गए, तब उनके चेले खो गए, डर गए और कमज़ोर पड़ गए थे। वे नहीं जानते थे कि वे किस तरफ जाएं, या फिर वे एक दूसरे के साथ एक समूह के तौर पर कैसे रहें। संसार को छोड़ने से पहले प्रभु यीशु ने उन्हें आश्वासन दिया कि वे उनके लिए एक सहायक भेजेंगे। यह सहायक पवित्र आत्मा था!

- आप शायद सोच रहे होंगे कि पवित्र आत्मा कौन है। निम्नलिखित बातें उसके विषय में जानने में आपकी सहायता करेंगी!
- पवित्र आत्मा परमेश्वर है।
- पवित्र आत्मा का अलग व्यक्तित्व है और वह केवल एक अमानवीय शक्ति नहीं है।
- पवित्र आत्मा त्रिएकता का एक भाग है।

➢ पवित्र आत्मा हमेशा से ही त्रिएकता का एक भाग रहा है, पुराने नियम में कभी–कभी पवित्र आत्मा कुछ लोगों पर उतरता होता था। प्रभु यीशु से पहले के समय में, पवित्र आत्मा कुछ विशेष लोगों पर, कुछ समय के लिए और किसी उद्देश्य के लिए प्रगट होता था।

➢ जब पवित्र आत्मा 'पिन्तेकुस्त' के दिन सब विश्वासियों पर उतरा तो वह विशेष मकसद के लिए उतरा। निम्नलिखित पदों पर ध्यान दें और लिखें कि इन वचनों अनुसार पवित्र आत्मा क्यों इस धरती पर आया :

यूहन्ना 14:26	
यूहन्ना 16:7–15	
गलातियों 5:16–17	
प्रेरितों के काम 1:8	
इफिसियों 1:13–14	

पवित्र आत्मा हमें शान्ति देता, शिक्षा देता और यीशु की शिक्षाओं को याद दिलाता है। आत्मा विजयी मसीही जीवन जीने में भी हमारी सहायता करता है। हम पवित्र आत्मा से भरने पर पाप और हमारी स्वार्थी इच्छाओं पर विजय पा सकते हैं। विश्वास करते ही पवित्र आत्मा हमें स्वर्ग में होने का आश्वासन और पाप के ऊपर शक्ति देता है।

❖ **पवित्र आत्मा से परिपूर्ण होने का क्या अर्थ है? :** यहाँ पर 'परिपूर्ण' शब्द का अर्थ है निर्देशित रहना, नियंत्रण में रहना और पवित्र आत्मा के अधिकार में रहना। इसका अर्थ है कि हमारे निर्णय, हमारी इच्छाएं, हमारे विचार इसके प्रभाव में हैं। जब मैं पवित्र आत्मा की ओर जाता हूँ और उसके अधिकार में होता हूँ तब मसीह मुझ में और मेरे द्वारा जीते हैं।

आत्मा से परिपूर्ण होने में कुछ चीज़ें शामिल हैं :

➢ इसमें प्रार्थना के द्वारा पाप को स्वीकार करना शामिल है। हमें प्रार्थना के द्वारा निरंतर अपने जीवन में पाप का अंगीकार करना ,और उसके द्वारा क्षमा प्राप्त करना और हमारे भीतर वास करने वाले परमेश्वर की आत्मा के द्वारा पवित्रता को प्राप्त करना चाहिए (1 यूहन्ना 1:9)।

- भले ही सभी मसीही लोगों के साथ आत्मा रहता है, परन्तु यदि उन लोगों के जीवन में बिना अंगीकार किये हुए पाप हैं और वे परमेश्वर की इच्छा और उनके वचन की आज्ञा का उल्लंघन करते हुए जीते हैं तो वे मसीही आत्मा से परिपूर्ण (उसके नियंत्रण में) नहीं होते।

- आत्मा के द्वारा परिपूर्ण होने के लिए परमेश्वर पर निर्भर होने की आवश्यकता होती है। निम्नलिखित पदों के अनुसार, बाइबल हमें परमेश्वर पर किस लिए निर्भर होने के लिए कहती है?

1 पतरस 1:14–16	
यूहन्ना 15:8	
यूहन्ना 16:13	
रोमियों 8:26	

- उत्पत्ति 1:26–31, उत्पत्ति 2:15 और उत्पत्ति 2:19–23 पढ़ें। परमेश्वर, पुरूष और स्त्री के बीच, जिन्हें उन्होंने रचा, क्या सम्बन्ध था?

❖ **क्यों कुछ मसीही लोग आत्मा से परिपूर्ण नहीं होते?** यह सम्भव है कि एक मसीही होने पर भी, एक व्यक्ति परमेश्वर की आत्मा से परिपूर्ण होने के फायदों को अनुभव नहीं करता। उसके बहुत से कारण हो सकते हैं, जिसमें ये निम्नलिखित कारण शामिल हैं :

- **जान–बूझ कर पाप करना और आज्ञा का उल्लंघन करना।** कुछ लोगों को अभी भी यह सीखने की आवश्यकता है कि "आत्मा के अनुसार चलो और शरीर की लालसा को किसी रीति से पूरी न करो" (गलातियों 5:16)। वे सांसारिक मसीहियों की तरह जीते हैं, जिसमें वे परमेश्वर से ऊपर संसार की चीज़ों को महत्व देते हैं।
- **ज्ञान का अभाव।** ज्ञान के अभाव के कारण, कुछ मसीही अपना जीवन आत्मिक असफलता में निरंतर जीते रहते हैं। वे प्रतिदिन परमेश्वर का वचन नहीं पढ़ते, और उसे नहीं मानते या अपने जीवन में पाप से लड़ते रहते हैं।
- **अविश्वास।** कुछ मसीही लोग विश्वास नहीं करते कि परमेश्वर उनके जीवन के दैनिक संघर्षों में मदद कर सकते हैं या करेंगे।
- **डर।** कुछ लोग गहरे आत्मिक अनुभव को लेकर अनजानी चीज़ों से डरते हैं।
- **संदेह।** बहुत से लोगों को ऐसा लगता है कि परमेश्वर उनसे कुछ असम्भव चाहते हैं। वे परमेश्वर के समर्थन और बिना शर्त के प्रेम की सीमा पर संदेह करते हैं।
- **स्वार्थीपन।** कुछ लोगों को ऐसा लगता है कि परमेश्वर उनसे उनके सुख ले लेंगे। वे यह नहीं पहचान पाते कि उनके लिए परमेश्वर की अद्भुत योजना कितनी महान है (मत्ती 6:33)।

- इफिसियों 5:3–17 पढ़ें। कौन से पाप दिये गए हैं? उन चीज़ों की सूची लिखें जो हमारे जीवनों में पवित्र आत्मा के कार्य को रोकेंगी।

➢ इफिसियों 5:19–21 पढ़ें और आत्मा से परिपूर्ण जीवन के परिणामों को लिखें। आत्मा से परिपूर्ण एक जीवन कैसा दिखता है?

आत्मा से परिपूर्ण जीवन वह है जहाँ हम एक दूसरे के साथ सदस्यता, प्रसन्नतापूर्ण स्तुति और आराधना, धन्यवादित और आभारी जीवन को अनुभव करते हैं। जब हम आत्मा से परिपूर्ण होते हैं, हम घमण्ड और विरोध में जीने की जगह एक दूसरे के अधीन हो सकते हैं।

❖ **पवित्र आत्मा के सामने आत्मसमर्पण करना :** एक व्यक्ति को यह याद रखना चाहिए कि पवित्र आत्मा एक विश्वासी में वास करता है। पवित्र आत्मा को आत्मसमर्पण करने के लिए अनुशासन की आवश्यकता होती है। इसके लिए नियत शान्त समय और प्रार्थना, मसीही मित्रों के साथ सदस्यता, परमेश्वर की आवाज़ को सक्रियता से सुनना और चुनावों का सामना करते समय उनके मार्गदर्शन को खोजना शामिल है। जब आप पवित्र आत्मा को आत्मसमर्पण करते हैं, तो आपके उद्देश्य परमेश्वर के उद्देश्यों से मेल खायेंगे, आप अपने जीवन में परमेश्वर की बुलाहट को पूरा करेंगे और दूसरों को गवाही देने की आपकी क्षमता उग्र रूप से बेहतर हो जाएगी।

➢ पवित्र आत्मा को आत्मसमर्पण कर देने का क्या परिणाम होता है? यह हमारे जीवन को कैसे प्रभावित करता है? गलातियों 5:22–23 पढ़ें और लिखें कि एक विश्वासी के जीवन में आत्मा क्या चीज़ें उत्पन्न करती है।

❖ **विजय पाना :** यह संसार हमें सिखाता है कि हमें विजय पाने या कुछ भी पाने के लिए कठिन परिश्रम करना चाहिए। इसका अर्थ यह है कि अपने खुद के बल या अपनी इच्छा शक्ति के कारण हम सफल होते हैं। हम अक्सर अपने आप कुछ–कुछ वायदे करते और असफल हो जाते हैं। हम बार–बार निर्णय लेते हैं कि हमें कैसा होना चाहिए और फिर भी अंत में हम कुछ और ही कर रहे होते हैं।

➢ हम ज्यादातर बहुत बार किसी चीज़ में असफल होने के बाद, हार मान जाते और आशा छोड़ देते हैं। क्या इसका अर्थ यह है कि बदलाव असंभव है या फिर हम उन्हीं तरीकों से हमेशा के लिए असफल होने के लिए निर्दिष्ट है। जकर्याह 4:6 कहता है, "न तो बल से, न शक्ति से, परन्तु मेरे आत्मा के द्वारा होगा, मुझ सेनाओं के यहोवा का यही वचन है।"

- एक विश्वासी का शरीर की इच्छाओं के ऊपर विजय पाना केवल परमेश्वर की शक्ति के द्वारा संभव है।
- जब हम पवित्र होने के लिए, अपने प्रयासों पर विश्वास करते हैं, तब हम परमेश्वर के दान को नकारते हैं और परमेश्वर को महिमा नहीं देते हैं। आखिरकार हमारा हारना निश्चित हो जाता है।

- परमेश्वर की आज्ञा पालन के द्वारा बुराई पर विजय पाने के लिए हम पवित्र आत्मा की सामर्थ्य पा सकते हैं।

➢ पवित्र शास्त्र हमें बताता है कि पवित्र आत्मा हमारे लिए एक दान है। यह ध्यान में रखना महत्वपूर्ण है कि हमारे जीवनों में पवित्र आत्मा कौन है। पवित्र आत्मा त्रिएकता का एक भाग है (और इसलिए वह परमेश्वर है)। प्रत्येक मसीही व्यक्ति के जीवन में पवित्र आत्मा की एक भूमिका होती है।

➢ यूहन्ना 14:15–21 और रोमियों 8:1–11, 26–27 पढ़ें और उन तरीकों की एक सूची बनाए जिससे पवित्र आत्मा प्रत्येक विश्वासी की सहायता करती है।

सारांश

❖ संसार को छोड़ते समय प्रभु यीशु ने हमारे लिए पवित्र आत्मा भेजने का वायदा किया।

❖ पवित्र आत्मा त्रिएकता का एक भाग है – वह जीवित है, विशेष गुणों के साथ उसका एक आलौकिक व्यक्तित्व है, और वह सभी विश्वासियों में वास करता है।

❖ पवित्र आत्मा हमें यह याद दिलाने आया कि मसीह ने हमें क्या सिखाया, वह हमें बदलने और पवित्रता का जीवन जीने में सशक्त करने, शान्ति देने, निर्देश देने और हमारा चरवाहा बनने आया।

❖ पवित्र आत्मा से परिपूर्ण होने का अर्थ है पवित्र आत्मा के चलाये चलना नियंत्रण में रहना और आत्मा के अधिकार में रहना है। इसका अर्थ अपने के तरीकों के बजाय परमेश्वर के तरीकों से जीवन जीना है।

❖ पाप को हमारे जीवनों में आने देने के द्वारा, आज्ञा उल्लंघन के द्वारा, अविश्वास, डर, संदेह और स्वार्थीपन के द्वारा हम अपने जीवनों में पवित्र आत्मा के कार्य को रोकते हैं।

❖ जब हम पवित्र आत्मा को आत्मसमर्पण कर देते हैं, तब आत्मा का फल हमारे अन्दर बढ़ने में सक्षम होता है।

❖ जब हम पवित्र आत्मा को आत्मसमर्पण कर देते हैं तब हम पाप पर विजय पा सकते हैं और अपने के पुराने मनुष्यत्व के नियंत्रण में नहीं रहते। उसकी बजाय, हम परमेश्वर की आत्मा के द्वारा जीवन व्यतीत करते हैं।

चिन्तन करने योग्य प्रश्न

1. आज आपको अपने जीवन में पवित्र आत्मा की शक्ति किस लिए चाहिए?

2. परमेश्वर में अटल रहने और अपनी बुरी प्रवृत्तियों से लड़ने के लिए हमें अनुशासन की आवश्यकता है। आज आप कौन से वायदे करेंगे जो आपके जीवन को सांसारिक चीज़ों के बजाय आत्मिक चीज़ों से भर देंगे? (विशेष रूप से अपने जीवन के विचारों पर और उन लोभों पर जिनसे आप घिरे हुए हैं, ध्यान दें)।